Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

२१ वी सदी का महिला लेखन – स्थिति एवं गति उपन्यास साहित्य के संदर्भ में

प्रा. डॉ. जाधव अर्जुन रतन
अंकुशराव टोपे महाविद्यालय,
जालना जि. जालना
मो.- ९४२१३२३५१७

साहित्य समाज का दर्पण होता है । समाज में घटित घटनाओंका चित्रण साहित्य के व्दारा होता है । हमारा हिंदी साहित्य विभिन्न प्रवृतियों की यात्रा करते हुए आगे बढा है उसमें तत्कालीन पमुख समस्याओं का चित्रण भी साहित्य में हुआ है । कृष्णा सोबती, मैत्रयी पुष्पा, मृणाल पांडे और प्रभा खेतान ने महत्वपूर्ण कथा साहित्य की रचना की है। हिंदी उपन्यास साहित्य उनके उपन्यासों के बिना अधूरा लगता है। उनके उपन्यासों से एक तरफ एक बडा पाठक वर्ग तैयार हुआ है, दुसरी तरफ शोध और आलोचना के नए आयाम उभरकर सामने आए है। पिछले दो दशको के साहित्य में इन लेखिकाओं कें उपन्यासों को महत्वपुर्ण स्थान मिला है। इन लेखीकाओं कें उपन्यासों पर समाजशास्त्री, सांस्कृतिक राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक, भाषा वैज्ञानिक आदि दृष्टियों से कार्य किया गया है। नारी समस्या, नारी चेतना का सच्चा रुप उनके उपन्यासों मे चित्रित है।

भारतीय समाज सुधारकोंने स्त्रियों पर होने वाले अत्याचारों कें खिलाफ आवाज उठायी हैं। जिनमें ईश्वरचंद्र विद्यासागर , राजा राम मोहनराय, महर्षि कर्वे आदी का नाम लिया जाता हैं। इन महापुरुषोंने सती प्रथा, बालविवाह जैसी कुरीतियों से स्त्री को बचाने कें लिए कदम उठाये है। साहित्य के क्षेत्र में रविंद्रनाथ टैगोर, जयशंकर पसाद, प्रेमचंद, मोहन राकेश जैसे कहानीकारों ने स्त्री की समस्याओं का चित्रन किया है और स्त्री के प्रति दया, सहानुभूमि और संवेदना का भाव प्रकट किया है। भक्तिकाल में मीरा कें बाद महादेवी वर्मा को आधुनिक मीरा कहाँ गया है। उन्होंने समाज में नारी की यातनाओ का वास्तविक धरातल पर अनुभव किया हैं। महादेवी वर्माने 'श्रृंखला की कडियाँ ' जैसी रचना लिखकर स्त्री की स्थिति का संवेदनशील चित्रण किया है। महादेवी वर्मा का मानना है 'पुरुष के व्दारा स्त्री का चरित्र अधिक आदर्शवादी बन सकता है। परंतु अधिक सत्य नही, विकृति के अधिक निकट पहुँच सकता है, परंतु यथार्थ के अधिक समीप नही।' नारी जितनी कोमल उतनी कठारे भी होती है। वह देवी भी है। दुर्गा भी है, सीता भी है, और द्रोपदी भी है। स्त्री को मदर तेरेसा बनानेवाला भी हमारा समाज है, झाँसी की रानी बनानेवाला भी हमारा समाज है, और फुलनदेवी बनानेवाला भी हमारा ही समाज है। आज भी स्त्री समस्याँओसे मुक्त नही है।

महिला लेखिकाओं में मन्नु भंडारी, उषा प्रियवंदा कृष्णा सोबती मृदुला गर्ग, ममता कालिया, मैत्रयी पुष्पा, प्रभा खेतान, मृणाल पांडे, राजी सेठ, नमिता सिंह सुर्यबाला, आदि महिलाओं ने स्त्री विमर्श से जुडी सभी समस्याओं को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है। इनके अतिरिक्त शशिप्रभा शास्त्री, चित्रामुदगल मुल्यगत परिवर्तनों की मांग करती है। नसिरा शर्मा की 'ठीकरे के मंगनी' स्त्री की अस्मिता और उसके संघर्ष को दर्शाती है। ममता कालिया का 'बेघर' मृदूला गर्ग का 'चित्तकोबरा' स्त्री के नैतिक यौन नियमों को चुनौती देता है। मैत्रयी पुष्पा का चाक उपन्यास यौन राजनीति का खुला प्रदर्शन करता है। प्रभा खेतान ने छिन्नमस्ता और पीली आंधी के व्दारा स्त्री के अर्न्तविरोधों और अर्न्तसंघार्षो को दर्शाया गया है। साथ ही स्त्री के लिए आर्थिक आत्म निर्भरता के महत्व को भी व्यक्त किया है।

महिला उपन्यासकारों ने स्त्री के अस्तित्व की जाँच पडताल करके यह स्पष्ट किया है कि नारी को समाज मे न किसी पर प्रभुता चाहिए न किसी का प्रभुत्व केवल अपना वह स्थान वह स्वत्व चाहिए जिनका पुरुषों के निकट कोई उपयोग नहीं परंतु जिनके बिना हम समाज का उपयोगी अंग नही बन सकती। नारी को सत्ता नहीं चाहिए वह तो केवल अपने अस्तित्व की पहचान चाहती है। वह एक स्वतंत्र व्यक्ति की तरह जीना चाहती है। महादेवी वर्मा ने कहाँ है 'हमे न किसी पर जय चाहिए न किसी से पराजय ।' महादेवी वर्मा ने स्त्री के स्वत्व की

मांग को उठाया है। उन्ही के समान अनेक महिला लेखिकाओं ने भी पुरुष वर्चस्ववाद के प्रतिमानों को तोडने का प्रयास अपने उपन्यासो मे किया है। नारी लेखन के प्रयास के परिणामस्वरुप स्त्री के भीतर सदियों से पैदा हुई मानसिकता परिवर्तित हुई है। मृणाल पांडे, मैत्रयी पुष्पा, नलिनी सिंह, प्रभा खेतान आदि लेखिकाओं नारीवाद के प्रश्नों को नए ढंग से उठाना प्रारंभ किया है और स्त्रीवादी लेखन स्त्री की पीडा को उजागर करने के लिए उसके मौन को तोडने में प्रयासरत है।

कृष्णा सोबती का नाम महिला उपन्यास कारों में विशिष्ठ और महत्वपूर्ण है। उन्होंने साहित्य में नयी दिशाओं की खोज की है। बादलों के घेरे, तिन पहाड, यारो के यार, मित्रों मरजानी, सुरज अंधेरे के, जिन्दगी नामा उनकी महत्वपूर्ण कृतियाँ है। कृष्णा सोबती का स्वयं अपने लेखन के बारे में मानना है की उनके निकट लिखना और जींना दो नही एक ही है । कृष्णा सोबती का दबंग और विद्रोही व्यक्तित्व उनकी रचनाओं में प्रतिबिम्बत होता है। अपनी कृतियों में उन्होने सामाजिक मूल्यों की टूटन को दिखाया है तो दुसरी तरफ वर्ण व्यवस्था की कमियों को भी दर्शाया है। यह उनकी गहरी संवेदनशीलता है जो जीवन के विभिन्न पहलू को लेकर चलती है। कृष्णा सोबती के लेखन में हमे निरंतर वैविध्य के दर्शन होते है, वह भावुकता से भरी कहानियाँ बादलों के घेरे में तिन पहाड की रचना करती है तो दुसरी और नितांत यथार्थवाद स्वर पर संबंधो को व्याख्यायित करनेवाली कहानियाँ, उपन्यास जैसे – यारों के यार, मित्रों मरजानी और जिन्दगी नामा की रचना करती है। राकेश कुमार के अनुसार - ''कृष्णा सोबती के उपन्यासों में औरत कतरा – कतरा, जिन्दगी मिसती अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष करती है। आज तक स्त्री के साथ समाज ने मानवीय ढंग से व्यवहार नही किया और न ही उसे पूर्ण मनुष्य के रुप मे स्वीकृति दी है इसलिए उसके साथ अमानवीय व्यवहार होता रहा है। स्त्री के प्रति इसी तरह के हिंसक अमानवीय, बर्बरतापुर्ण व्यवहार को कृष्णा सोबती ने अपनी लेखनी मे दिखाया है।''

कृष्णा सोबती का प्रसिध्द उपन्यास 'मित्रों मरजानी' है। उसमें वह यौन नैतिक बन्धनों को चुनौती देती नजर आती है। शरीर की सहज मांग का खुला चित्रण इसमें किया गया है । उपन्यास के कथ्य और चरित्र ने हिन्दी साहित्य में धूम मचा दी थी। मित्रों जैसा नारी चरित्र समूचे हिन्दी कथा साहित्य में दुर्लभ है। मित्रों हिन्दी साहित्य की पहली ऐसी नारी है। जो सदियों से चले आ रहे नैतिक मुल्यों को तार-तार कर अपनी जिन्दगी जीती है। उसमें यौवन की अमिट प्यास है। मित्रों स्वच्छन्द वातावरण में पली बढी हुई है। डॉ. सरिता कुमार ने कहाँ है। 'मित्रों मरजानी में शारीरिक सेक्स पर अधिक बदल दिया गया है, उसकी दैहिक प्यास का इतना खुला चित्रन करना कृष्णा सोबती के साहस का परिणाम कहा जा सकता है।' मित्रो मरजानी (पंजाब में प्यार में दी जाने वाली गाली) एक दबंग होने के साथ तेजोभरी चेतना संपन्न स्त्री है। परिवार और पति का बंधन उसकी ताजी युवा काया को यौन सन्तुष्टी देने में असमर्थ है। वह धर्म संस्कृती के नाम पर दबने और कुठाओं का शिकार नही होती, वह विशेषकर शारीरिक आवश्यकताओं को स्वीकारती है।

मित्रों की माँ का नाम बालो है। जो एक गणिक के रुप में रही है। मित्रों को अपनी माँ से कोई सिकायत नही है। उसकी यौन तृप्ती का प्रबंध भी करा देती है। मित्रो का पति सरदारी है । वह अपनी पत्नी पर नियंत्रण करने का भरसक प्रयत्न करता है परंतु असफल रहता है। पति व्दारा दी गई शारीरिक प्रताडना और जेठ बनवारी की जवाब देही से भी घबराती नही है। ससुराल पक्ष के लोग उसे ढीठ निर्लज्ज मानते है। उसके बंधनों को वह स्वीकार करने को तैयार नही है। मित्रों को मैके भेज दिया जाता है। मैके आने पर उसे और अधिक स्वतंत्रता प्राप्त होती है। विवाह के पूर्व भी मित्रों की माँ उसपर कोई नियंत्रण नही रखती थी। उसकी माँ बालो ने भी अप्रतिबंधित जीवन व्यतीत किया है। लेकिन मैके में एक ऐसी घटना घटती है कि मित्रों का मन परिवर्तीत हो जाता है, अनेक पुरुषो के पास भटकने वाली मित्रों अंतत: सरदारी के प्रति समर्पित हो जाती है । क्योंकि वह अपनी माँ बालो का अकेलापन तथा उपेक्षित अवस्था को अपने भविष्य का हिस्सा बनाने को तत्पर नही अपनी माँ का बुढापा देखकर उसमे चैतन्यता आ जाती है और वह अपने परिवार और पति के घर लौटती है। यह मित्रों की बौध्दिकता और चैतन्यता का परिणाम है।

'मित्रो मरजानी' उपन्यास में कृष्णा सोबती ने मित्रों का चरित्र एक स्वंतत्र नारी के रुप में चित्रित किया है। एक स्वतंत्र नारी का अनुठा व्यक्तित्व उसमें दिखाई देता है। क्योंकि हम नारी के उस रुप से परिचित है जो मर्यादा और अनुशासन मे ढलकर एक कठपुतली बनकर रहती है। इस उपन्यास में कृष्णा सोबती ने स्त्री के अन्तर्मन से

हमें परिचित कराया है। मन की पीडा को वह शब्दों में व्यक्त करती है उसे धन और लोभ का लालच नही है। उसमें त्याग और बलिदान की भावना है। माँ बालो और मित्रों दोनों की यह विशेषता रही है कि वे समाज के व्दारा स्त्री के लिए बनाये गये नैतिक अनैतिक के चक्रव्यूह तो तोडती नजर आती है। कृष्णा सोबती ने अपने उपन्यासों मे हमारे समाज में स्त्री के बारे में बनी मानसिकता को बदलने का प्रयास किया है। स्त्री की यौन शुचिता के बने नियमों को तोडा है। अपने साहित्य में व्यक्ति के स्तर पर स्त्री भी प्रतिष्ठा और उसकी अस्मिता संबंधी प्रश्नों को उठाया है।

प्रभा खेतान बीसवी शताब्दी के अंतिम दशक की नारीवादी सोचवाली महत्वपुर्ण लेखिका है। उन्होने नारी के बहुआयामी संबंधो को सामाजिक और पारिवारिक स्तर पर बडे प्रभावी विश्वसनीस ढंगसे चित्रित किया है। वह एक संवेदनशील और दृढसंकल्पी रचनाकार है। उन्होंने परम्परा और आधुनिकता के बीच मारवाडी स्त्री की अस्मिता की पहचान से हमे परिचित कराया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री की अस्मिता का यथार्थता का बोध कराया है। प्रभा खेतान का जन्म १ नवम्बर १९४२ को कलकत्ता के एक मारवाडी परिवार में हुआ था। प्रभा खेतान संयुक्त परिवार से संबंधित थी। प्रभा ने दर्शनशास्त्र में पी.एचडी की है। बचपन से ही प्रभा खेतान के साथ परिवारजनों का उपेक्षित पक्षपातपूर्ण व्यवहार रहा था। इससे उनके मन में प्रतिशोध की भावना घर कर गयी थी। वह व्यवसाय से जुडी रहने के बावजूद साहित्य में उन्होने अपना एक वजूद बनाया था। प्रभा खेतान एक प्रतिष्ठित उपन्यासकार, नारीवादी चिंतक, कवयित्री के रुप में प्रतिष्ठित है।

प्रभा खेतान ने आपने विचारों को पाठकगण तक पहुँचने के लिए उपन्यास का सशक्त माध्यम अपनाया है। अपने उपन्यासों में उन्होंने नारी के जीवन के भावनात्मक संबंधो को ईमानदारी से वर्णन किया है। उनके उपन्यासों में मारवाडी समाज की उच्च वर्गीय शहरी स्त्री कें जीवन की गाथा है। उनके लेखन में यथार्थ का समावेश है। साथ ही विचारों पर पाश्चात्य दर्शन का प्रभाव दृष्टीगोचर होता है। प्रभा खेतान स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता उसके अस्तित्व की पहचान के लिए आवश्यक मानती है। इस संदर्भ में वह स्त्री को एक नई दिशा देने में सफल हुई है। इस प्रकार हिंदी साहित्य में उसने अपनी अलग पहचान बनाई है।

'छिन्नमस्ता' प्रभा खेतान का एक चर्चित उपन्यास है। यह उपन्यास समाज में स्त्री की हीन एवं दोयम अवस्था को दर्शाने में सक्षम है। छिन्नमस्ता की नायिका प्रिया है, वह बचपन से ही अपने परिवार में उपेक्षित संतान की तरह रही है। वह पुत्र की इच्छा से हुई पाँचवी संतान थी। वह भाई बहनों की तुलना में उतनी सुंदर नही थी इस कारण माँ उसे अक्सर दुत्कारती रहती थी। दाई माँ ही उसका ख्याल रखती थी। प्रिया जब नौ वर्ष की थी तभी उसके पिता की मृत्यू हुई। साथ ही बडे भाई की वासना की शिकार होने से वह मन ही मन सहमी सी रहने लगी। प्रिया का विपरीत परिस्थितीयों से लडते लडते वह इतनी साहसी हो गई कि प्रत्येक चुनौती का डटकर सामना करने लगी। भाई व्दारा शोषित होने से उसके मन में पुरुष वर्ग के प्रति घृणा पैदा हुई।

प्रिया का विवाह नरेन्द्र से होता है। वह धनाढ्य था फिर भी विवाह के उपरान्त प्रिया का जीवन खुशियों से भरा नही रहा। वह स्त्री को वस्तु के रुप में प्रयोग करता था। इससे अपने पति के प्रति उसकी घृणा बढती ही गयी। प्रिया माँ बन जाती है। फिर भी जीवन का खालीपन दूर नही कर पाती है। मन लगाने के लिए वह व्यापार करना प्रारंभ करती है। धीरे – धीरे व्यापार में उसे अपना अस्तित्व दिखाई देने लगता है, पर पति नरेन्द्र को उसके व्यापार करने पर आपत्ति होने लगती है, नरेन्द्र को मन ही मन मे डर है कि प्रिया कही मेरे बराबर न आ जाये जिस कारण वह विचलित हो जाता है। प्रिया को नरेन्द्र का यह प्रताडित व्यवहार स्वीकार न हुआ और वह अपने किसी अधिकार की मांग करे बिना घर छोडकर चली जाती है। उसका पति नरेन्द्र घर मे नयी नयी औरतों को लाता है साथ ही उसे व्यापार न करने को मजबूर करता है। प्रभा खेतान यहाँ पर प्रश्न उठाती है- कि पुरुष एक स्त्री को अपने बराबर का स्थान देना नही चाहता है। पुरुषों ने स्त्री को जो भी स्वंतत्रता दी है वह स्वयं की सुविधा के लिए दी है। सीमोन ने उचित ही लिखा है। 'पुरुष ने स्त्री की उतनी ही मांगे स्वीकारी जितनी उसके हित में थी या देना चाहता था। पुरुष ने औरत का सब कुछ अपने हाथों मे रखा। उसने स्त्री के स्वार्थ मे उसकी नियति नहीं गढी बल्कि अपनी परियोजनाओं और अपनी जरुरतों से वह नियोजित हुआ'

प्रिया को जब नरेन्द्र घर से बाहर कर देता है तो वह अपनी छोटी सास और ननद नीना के साथ रहती है। स्वयं को प्रिया व्यापार में व्यस्त कर लेती है। नीना की शादी भी प्रिया ही करती है। प्रिया अन्त में अपने जीवन मे

कुछ कमी होने के बावजुद भी सतुष्ठ है क्योंकी वह अपनी बनाई राह पर चल रही है, मृत्यु से भी उसे भय नही है। 'छिन्नमस्ता' की प्रिया बचपन से ही पक्षपात और शोषण की शिकार हो गई है। प्रिया के साथ उसकी माँ भी पक्षपात पूर्ण व्यवहार करती है। प्रिया की माँ कस्तुरी अपनी बडी बेटी सरोज का विशेष ध्यान रखती है। माँ प्रिया को डॉटती फटकारती है। क्योंकि बेटे की चाह में प्रिया का जन्म जबरदस्ती कस्तुरी पर थोपा गया था। खाने- पीने की वस्तुओं तक में भेदभाव किया जाता है। एक माँ का इतना पक्षपातपूर्ण कठोर हदय देख कर दाई माँ भी विचलित हो जाती और उसी दिन से नौकरी छोडकर चली जाती है।

छिन्नमस्ता उपन्यास में प्रभा खेतान ने मासिक धर्म के समय स्त्री को किस प्रकार अछुत माना जाता है दर्शाया है। प्रिया को भी मासिक धर्म के समय अछुत की तरह व्यवहार सहन करना पडा था। जिससे उसका मन विद्रोह से भर जाता था। जब उसके घर में चाचा, चाची, ताई आती है। तो एसे बरामदे में बंद करके रखा जाता था। प्रभा खेतान ने प्रिया के जरिये स्त्री के इस प्राकृतिक शारीरिक बदलाव में उत्पन्न किए गये अपराध बोध को दर्शाया गया है।

छिन्नमस्ता जिसका अर्थ है देवी एक ऐसी देवी जो अपना ही कटा हुआ सिर लेकर बाये हाथ में चलती है। छिन्नमस्ता प्रथा खेतान का एक ऐसा उपन्यास है जो एक स्त्री के शोषण को दर्शाता है। यह शोषण कहीं शारीरिक है तो कहीं मानसिक है। प्रिया को शोषित करनेवाले कहीं उसके भाई, माँ घर के सदस्य है तो कहीं ससुराल में पिता। शिक्षा प्राप्ति के दौरान भी प्रिया प्रेम के नाम पर शोषित हुई और टुट गयी बल्कि बाद मे यह स्वयं को विशेष आत्मशक्ति के साथ खडी होती है और अपनी ऐसी जगह बनाती है जहाँ वह पुरुष के शोषण की सीमाओं से बाहर है। प्रिया के माध्यम से प्रभा खेतान ने स्त्री की पूर्ण स्वतंत्रता को ही उजागर किया है।

ग्रंथ सूची :-

१) प्रभा खेतान और उनका साहित्य- परवीन मलिक
२) समकालीन महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी- विमर्श- डॉ. मुक्ता त्यागी.
३) मित्रों मरजानी, कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली.
४) छिन्नमस्ता- प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली.
५) मेहरुनिसा परवेज के कथा साहित्य में नारी- डॉ.आर.एस.जगताप, विदया प्रकाशन कानपुर.